* Yuva Bhooth aur Bhavishy ka Sethu- Global Research Canvas. Peer reviewed Journal- ISSN-2394-5427, April 2023.

St. Joseph's College for Women (A)

Visakhapatnam - 530 004

WAJA INDIA

REACCREDITED BY NAAC & ISO 9001: 2015 CERTIFIED

యువత సమగ్రాభివృద్ధిలో విద్య, సాహితీ సంస్కృతుల పాత్ర

युवा पीढी के समग्र विकास में शिक्षा, साहित्य और संस्कृति की भूमिका

यूनां समग्रविकासे शिक्षायाः साहित्य-संस्कृतेः च भूमिका

Role of Education, Literature & Culture in the Holistic Development of Youth

National Seminar Certificate

Certified that Mr. / Mrs. / Dr. A Swathi, ASD Govt Degree College, Kakinada has Participated / Presented a Paper in the Two-Day National Seminar on "Role of Education, Literature & Culture in the Holistic Development of Youth" jointly organised by the Language Departments, St. Joseph's College for Women (A) and Writers And Journalists Association of INDIA on 17th & 18th April 2023.

Title of the Paper: युवा - भूत और भविष्य का सेतु

Mr. Shivendra Prakash Dwivedi
Founder Secretary General
Writers and Journalists Association of India
New Delhi

PK Jayalakshmi

Dr. P.K. Jayalakshmi
Convener, National Seminar
HOD Second Languages
St. Joseph's College for Women (A), Vizag

Dr. Sr. Shyji P.D.
Principal & Correspondent
St. Joseph's College for Women (A),
Visakhapatnam

GLOBAL RESEARCH CANVAS

ISSN 2394-5427 multidisciplinary, peer-reviewed (refereed) journal

NATIONAL SEMINAR

17-18 April-2023

युवा पीढ़ी के समग्र विकास में शिक्षा, साहित्य और संस्कृति की भूमिका

యువత సమగ్రాభివృద్ధి లో విద్య, సాహితీ ,సంస్కృతు ల పాత్ర

Role of Education, Literature and Culture in the Holistic Development of Youth

Executive Editor
Dr. P.K. jayalakshmi

Editor
Manoj kumar

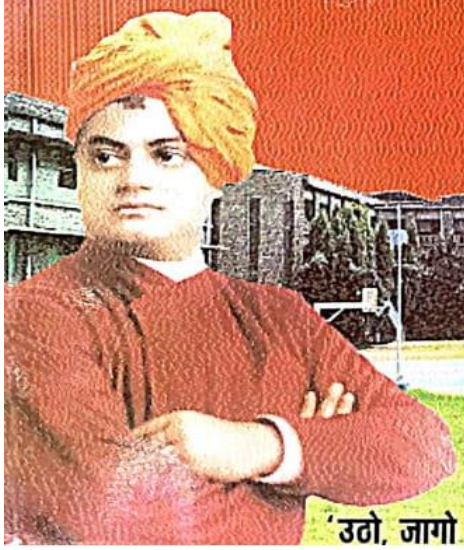

St. Joseph's College for Women (A)
Visakhapatnam - 530 004
REACCREDITED BY NAAC & ISO 9001: 2015 CERTIFIED

'उठो, जागो और तब तक रुको नहीं जब तक कि तुम अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते'

अनुक्रमणिका

सम्पादक की कलम से	15-16
युवा वर्ग के समग्र विकास की प्रासंगिकता में शिक्षा एवं साहित्य की भूमिका डॉ. एस. कृष्ण बाबू	17-19
भारतीय संस्कृति : युवा पीढ़ी के उदात्त संस्कारों की उत्कृष्ट आधारशिला आचार्य. पी.के. जयलक्ष्मी /डॉ. सिस्टर. पैजी. पी.डी.	20-22
आज की युवा पीढ़ी : भटकाव के कारण डॉ. वी. मणि	23-24
साहित्य और सिनेमा का युवा पीढ़ी पर प्रभाव कर्रा पृथ्वी	25-26
युवाओं को एक सकारात्मक दिशा में प्रशिक्षित करना जरूरी एन. इंदु वदना	27-28
युवा-पीढ़ी के सर्वांगीण विकास में मूल्य आधारित शिक्षा, साहित्य एवं संस्कृति डॉ. कर्रि सुधा	29-30
युवा पीढ़ी के समग्र विकास में हिंदी साहित्य का योगदान : रामदरश मिश्र के विशेष संदर्भ में डॉ. विंजनंपाटि यशोधरा यस.ए. हिंदी	31-34
शिक्षा, साहित्य और संस्कृति का अंत:संबंध और युवा पीढ़ी डॉ. के. अनिता	35-36
युवाओं के रचनात्मक सोच में शिक्षा, साहित्य और संस्कृति की भूमिका डॉ. वी. रवीन्द्र नायक /डॉ. अल्ताफ पाशा. डी.एम	37-40
समसामयिक शैक्षिक जगत का विकृत रूप और आज का युवा वर्ग मिर्जा मासुमे फातिमा	41-43
तेलुगु भाषा का लोकसाहित्य डॉ. बी. तीरूमला देवी	44-45
युवा पीढ़ी के समग्र विकास मे शिक्षा का योगदान लिंगम चिरंजीव राव	46-48
रोजगार मूलक हिन्दी - जनसंपर्क अधिकारी डॉ. ई. राजा कुमार	49-50
हिंदी की उन्नति में अनुवाद का योगदान डॉ. के. श्याम सुन्दर	51-52
शिक्षा, साहित्य और संस्कृति की युवा पीढ़ी का समग्र विकास में योगदान के. वी. राजेश्वरी	53-54
युवा भूत और भविष्य का सेतु ए. स्वाति	55-56

युवा भूत और भविष्य का सेतु

ए. स्वाति
हिंदी प्राध्यापक,
ए.एस.डी गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज(2),(A), काकिनाडा, आंध्र प्रदेश.

सारांश

युवा देश और समाज की रीड की हड्डी होती है। युवा देशऔर समाज को शिखर पर ले जाते हैं। युवा देश का वर्तमान है तो भूतकाल और भविष्य के सेतु भी हैं। युवा देश और समाज के जीवन मूल्यों के प्रतीक हैं। लेकिन देखने में आ रहा है कि आज की युवाओं में नकारात्मकता जन्म ले रहीहैं, उनमें धैर्य की कमी है।वे हर वस्तु अतिशीघ्र प्राप्त कर लेना चाहते हैं। वे आगे बढ़ने के लिए कठिन परिश्रम की बजाय शॉर्टकट्स खोजते हैं, भोग विलास और आधुनिकता की चकाचौंध उन्हें प्रभावित करती है। उच्च पद,धन दौलत, और ऐश्वर्य का जीवन उनका आदर्श बन गए हैं। अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने में जब वे असफल हो जाते हैं तो उनमें मानसिक तनाव का भी शिकार हो जाते हैं। युवाओं की इस नकारात्मकता को सकारात्मकता में परिवर्तन करने की शक्ति शिक्षा संस्कृति और साहित्य में है।

शब्द संकेत : युवा, साहित्य शार्टकट्स, तनाव, शिक्षा, सपने, राष्ट्र

प्रस्तावना :

युवा में गहन ऊर्जा और उच्च महत्वाकांक्षा से भरने का काम साहित्य लेता है तो उनकी आंखों में भविष्य के इंद्रधनुषी सपना भरने का काम शिक्षा करती हैं और समाज और अपने आप को बेहतर बनाने का काम संस्कृति करता है।

साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन करना मात्र नहीं है। इसका उद्देश्य समाज का मार्गदर्शन करना है। आधुनिक काल के प्रमुख विचारक रामचंद्र शुक्ल ने साहित्य को जनता का संचित प्रतिबिंब माना जाता है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्य को ज्ञान राशि का संचित कोष माना है और पंडित बालकृष्ण भट्ट ने साहित्य को जनसमूह के हृदय का विकास माना है। लेकिन आज की युवा पीढ़ी के बारे में कहा जाता है कि साहित्य से उसे कोई लगाव नहीं है। कुछ तो रोजगारपरक शिक्षा के दबाव में और कुछ आधुनिक सूचना तकनीकी के मोह में यह पीढ़ी साहित्य किताबों से दूर होती गई है। इसके पीछे एक वजह पढ़ने योग्य साहित्य का ना लिखा जाना भी बताया जाता है। कारण जो भी हो पर युवा पीढ़ी के साहित्य से विमुखता को समाज के लिए बड़े खतरे के रूप में रेखांकित किया जाता है। साहित्य से संवेदना का विकास होता है और संवेदना के अभाव में व्यक्ति में हिंसक और क्रूर वृत्तियां पायी जाती हैं। विचारों ने साहित्य को जन्म दिया है और साहित्य ने मानवीय विचारधारा को गतिशीलता प्रदान की है। इतिहास साक्षी है कि किसी भी राष्ट्रीय समाज में जितने भी परिवर्तन आए हैं, वे सब साहित्य के माध्यम से ही आए हैं। साहित्यकार समाज में फैली कुरीतियों, विसंगतियों, विषमाताओं तथा असमानताओं के बारे में लिखता है इनके प्रतिजनमानस को जागरूक करने का कार्य करता है जब सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों का पतन होने लगता है तब साहित्य ही जनमानस का मार्गदर्शन करता है।

संस्कृति-कहा जा सकता है कि कोई भी पेड़ तय तक ही जीवित रह पाता है जब तक वह अपनी जड़ों से जुड़ा रखता है।

समाज में व्यक्ति की वे जड़ें संस्कृति हैं,जिससे जुड़ा रहना व्यक्ति के लिए आवश्यक होता है। संस्कृति से कटा हुआ व्यक्ति कटी डोर की पतंग की भांति होता है जो उड़ तो रहा होता है लेकिन मंजिल का रास्ता तय नहीं होता है, ना ही पता होता है कि वह कहां जाएगा। वर्तमान परिदृश्य में समाज को देखें तो पता चलता है कि युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति को दिन प्रतिदिन पीछे छोड़कर आगे आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल होते जा रहे हैं। संस्कृति संस्कार ऐसे अंग है जिनसे समाज तय होता है। हमारे देश प्रदेश की संस्कृति व संस्कार वैश्विक मंच पर आदर्श स्थान पा रहे हैं। भारतीय जीवनशैली को विश्व में सबसे श्रेष्ठ व सभ्य माना जाता रहा है, लेकिन समय के चक्र पाश्चात्य प्रभाव ने कई संस्कृतियों के संस्कार को अधिक कर रख दिया। आज अधिकांश लोग संस्कृति व संस्कारों के साथ जीने को पिछड़ापन मानते हैं लेकिन पिछले हुए तो उन्हें कहा जा सकता है जो अपनी संस्कृति व संस्कारों से छिटककर अपना पाश्चात्यकरण कर चुके हैं।

शिक्षा- युवा के लिए बहुत ही आवश्यक है क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही युवा के जीवन में ज्ञान का प्रकाश होता है। जब युवा के जीवन में ज्ञान का प्रकाश होता है, तब वह अपने विकास के लिए आगे बढ़ता है और अपना विकास करने के साथ-साथ अपने देश का भी विकास करता है। युवा ही देश की रीड की हड्डी होती हैं और युवा का शिक्षित होना बहुत ही जरूरी है। शिक्षा प्राप्त करके युवा हर क्षेत्र में एक सफल इंसान बन सकता है। शिक्षा के बिना व्यक्ति के जीवन में अंधकार रहता है, अंधकार को व्यक्ति के जीवन से सिर्फ शिक्षा ही दूर करती हैं।

शिक्षा से व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है और ज्ञान प्राप्त करने के बाद वहहर क्षेत्र में कार्य करने से पहले उस कार्य को जिस तरह से करना है उसके बारे में पूरी रणनीति तैयार करता है। जब वह अपने ज्ञान के माध्यम से रणनीति तैयार करता है तब उसे सफलता अवश्य प्राप्त होती हैं। आज जिस देश में युवा शिक्षितहुए हैं उस देश का विकास अवश्य हुआ है। यह 21वीं सदी है जहां हर समय कुछ ना कुछ नया सीखना ही सफलता का मानदंड है। भारत युवाओं का देश होने के बावजूद बेरोजगारी यहां की सबसे बड़ी समस्या है। जब युवा शिक्षित होगा तभी एक नए समाज का निर्माण होगा जब युवा शिक्षित होंगे तब समाज के अंदर जो बुराइयां हैं, वह बुराइयां नष्ट हो जाएंगे क्योंकि शिक्षा से ही अज्ञान का नाश होता है। पिछले समय में समाज में कई तरह की बुराइयां थी जिस बुराई को युवा पीढ़ी के द्वारा ही खत्म किया गया है क्योंकि युवा पीढ़ी शिक्षा की ओर बढ़ रहे हैं। आने वाले समय में युवा पीढ़ी के द्वारा ही देश का विकास होने वाला है। जब युवा शिक्षा के क्षेत्र में कदम रखता है तब वह ज्ञान प्राप्त करता है और उससे अपना विकास प्राप्त कर सकता है।

निष्कर्ष :

आवश्यकता इस बात की है कि बड़े लोग बच्चों के सम्मुख एक ऐसा आदर्श ऐसा प्रस्तुत करें जिससे वे अपना सके दूसरों को सुधारने के उपदेश देने की अपेक्षा हम स्वयं को सुधारें। कबीर जी के शब्दों में 'बुरा जो देखन में चला बुरा न मिलिया कोई जो दिल खोजा आपना मुझसे बुरा ना कोई'। जब तक मां-बाप को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की वास्तविकता, महानता, गौरव का ज्ञान नहीं होगा बच्चों को क्या सिखाएंगे? यह सामूहिक प्रयास प्रत्येक व्यक्ति निजी तौर से शुरू करें। हम शिक्षा में परिवर्तन की बात करते हैं। यह परिवर्तन कौन करेगा? बच्चे तो स्वयं नहीं करेंगे, बच्चों को जो सामग्री पढ़ने के लिए हम विद्यालयों में देते हैं उनमें हमारे प्राचीन और महान संस्कृति और सम्प्रदायों को वर्तमान संदर्भ में डालकर बच्चों तथा युवाओं को पढ़ाने के लिए दी जानी चाहिए, इससे उन्हें सदाचार,उदात्त भावनाएं तथा श्रेष्ठ जीवन मूल्य मिलेंगे। परिवर्तन अवश्य रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. मालवीय डॉ. सौरभ, देश और समाज के उत्थान में युवाओं की भूमिका।
2. मल्ला डॉ. रमेश, जनसत्ता।
3. डोगरा प्रो. मनोज संस्कृति से अलग होती युवा पीढ़ी।
4. डॉ.अरुण, शिक्षा और युवा पर निबंध।